ISBN: 978-93-92568-81-7

युद्ध का सिद्धांत

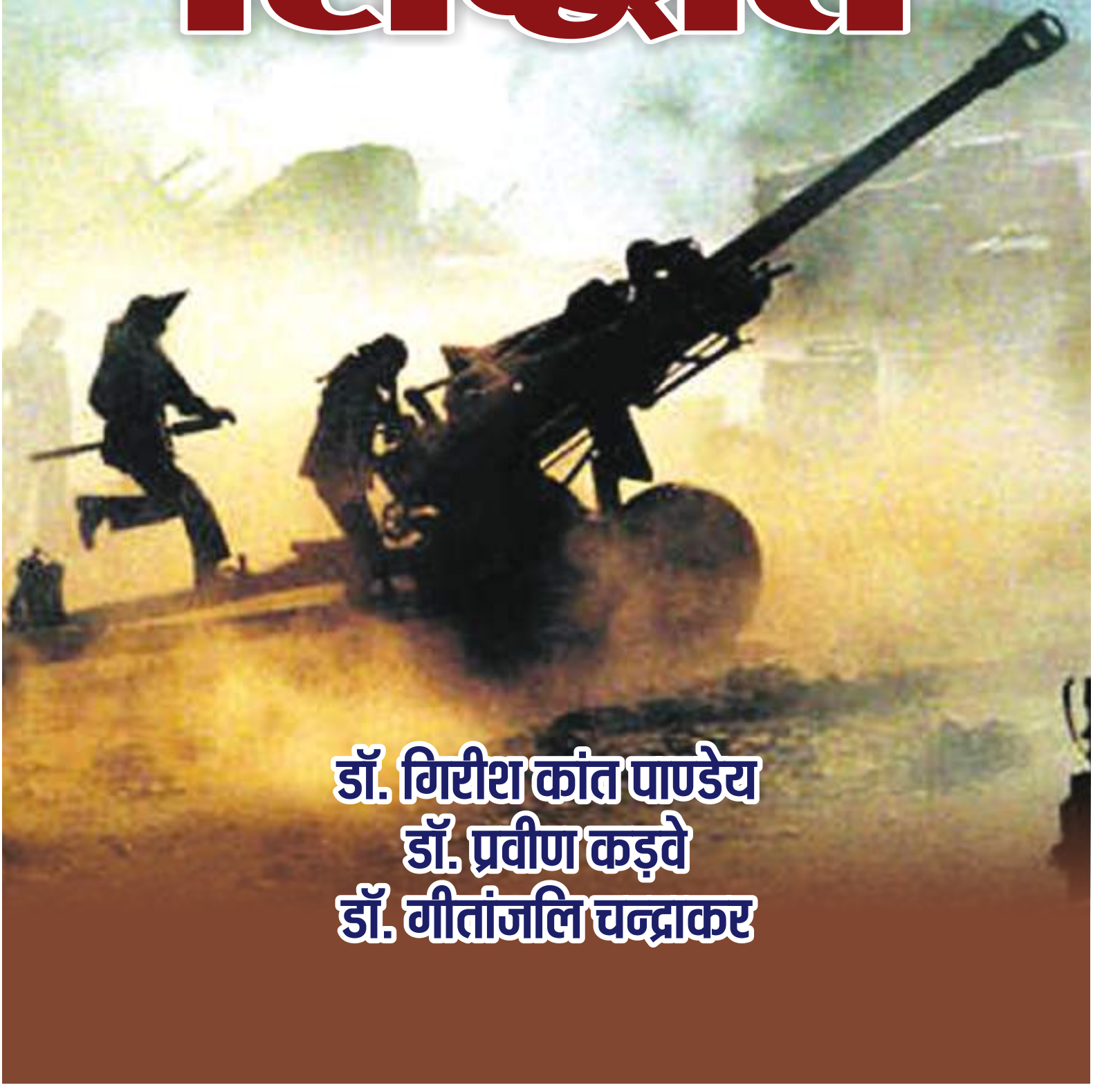

डॉ. गिरीश कांत पाण्डेय
डॉ. प्रवीण कड़वे
डॉ. गीतांजलि चन्द्राकर

लेखक परिचय

डॉ. गिरीश कांत पाण्डेय

शिक्षा	:	एम.एस-सी., बी.जे., पी-एच.डी., डी.लिट्.।
सम्प्रति	:	प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, रक्षा अध्ययन विभाग, शा. नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत।
शैक्षणिक अनुभव	:	35 वर्ष (स्नातकोत्तर)
प्रकाशन	:	विषय से संबंधित 65 शोध आलेखों का राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय शोध प्रपत्रों में प्रकाशन तथा 5 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन तथा प्रसार भारती आकाशवाणी व दूरदर्शन और अन्य राष्ट्रीय न्यूज चैनल से अनेक सामयिक व सामरिक वार्ताएँ एवं परिचर्चाएँ प्रसारित तथा IDSA (Institute of Defence Studies and Analysis, New Delhi) के एसोसिएट सदस्य है।
शोध निर्देशन	:	आपके निर्देशन में 4 शोधार्थियों को पी-एच.डी. अवार्ड और 4 शोधार्थी पंजीकृत तथा 2 छात्राओं को पोस्ट डॉक्टोरल फेलो का अवार्ड प्राप्त हो चुका है। आपने Chhattisgarh Council of Science and Technology से प्राप्त लघु शोध परियोजना को भी पूर्ण किया है।
विषय विशेषज्ञ	:	विभिन्न राज्यों के लोक सेवा आयोग, विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा विभिन्न संस्थाओं में विषय विशेषज्ञ के रूप में कार्यानुभव ।

युद्ध का सिद्धांत

''स्नातक, स्नातकोत्तर एवं प्रतियोगी परीक्षा हेतु बहुउपयोगी''

लेखकगण

डॉ. गिरीश कांत पाण्डेय

(एम.एस–सी., बी.जे., पी–एच.डी., डी.लिट्.)

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, रक्षा अध्ययन विभाग

शा. नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय

रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

डॉ. प्रवीण कड़वे

{एम. एस–सी, पी–एच.डी., नेट (जे. आर. एफ.)}

सहायक प्राध्यापक, रक्षा अध्ययन विभाग

शा. नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय

रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

एवं

डॉ. गीतांजलि चन्द्राकर

(एम.एस–सी., पी–एच.डी., पी.डी.एफ.)

रक्षा अध्ययन विभाग

शा. नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय

रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Publisher:

Aditi Publication, Raipur, Chhattisgarh, India

Ph.: +91 9425210308

युद्ध का सिद्धांत

2024
Edition - **01**

लेखकगण

डॉ. गिरीश कांत पाण्डेय
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, रक्षा अध्ययन विभाग
शा. नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

डॉ. प्रवीण कड़वे
सहायक प्राध्यापक, रक्षा अध्ययन विभाग
शा. नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

डॉ. गीतांजलि चन्द्राकर
रक्षा अध्ययन विभाग
शा. नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ISBN : **978-93-92568-81-7**

Copyright© All Rights Reserved
No parts of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of authors.

Price : Rs. **399/-**

Publisher and Printer :
Aditi Publication,
Opp. New Panchajanya vidya Mandir, Near Tiranga Chowk,
Kushalpur, Raipur, Chhattisgarh, INDIA
+91 9425210308

प्राक्कथन

मानव सभ्यता के इतिहास में युद्ध एक स्थायी और निर्णायक तत्व रहा है। यह केवल सैन्य संघर्ष का प्रतीक नहीं बल्कि शक्ति, विचारधारा, संसाधन, सुरक्षा और प्रभुत्व की जटिल राजनीति का प्रतिबिंब है। "युद्ध का सिद्धांत" पुस्तक एक ऐसा प्रयास है, जिसमें युद्ध की पारंपरिक एवं समकालीन परिभाषाओं का विश्लेषण करते हुए इसे राष्ट्रीय एवं वैश्विक सुरक्षा परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास किया गया है।

युद्ध के सिद्धांतों का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी संघर्ष में अधिकतम लाभ के साथ न्यूनतम हानि हो। इनमें सैन्य रणनीति, शत्रु की शक्ति का आकलन, संसाधनों का उचित उपयोग, सैनिकों का मनोबल, तथा समय और स्थान की महत्ता जैसे तत्व शामिल होते हैं। इसके अतिरिक्त, आधुनिक युद्ध में प्रौद्योगिकी, संचार और साइबर युद्ध के नए आयाम भी जुड़ गए हैं, जो युद्ध की परिभाषा और स्वरूप को और अधिक जटिल बना देते हैं।

''युद्ध का सिद्धांत'' न केवल सैन्य नेतृत्व के लिए उपयोगी होते हैं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों, राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक राजनीति को समझने में भी सहायक सिद्ध होते हैं। इसलिए, युद्ध के सिद्धांतों का अध्ययन केवल एक सैन्य आवश्यकता ही नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक और राजनीतिक अनिवार्यता भी है।

आज का युद्ध केवल सीमाओं पर लड़े जाने वाले सैन्य संघर्ष तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि इसके कई नए और जटिल रूप सामने आए हैं – जैसे आर्थिक दबाव, सूचनात्मक नियंत्रण, सामाजिक अस्थिरता, साइबर हमले और आतंरिक असंतोष। इस पुस्तक में इन सभी पहलुओं की एक सुसंगत और क्रमबद्ध विवेचना की गई है।

1. युद्ध का सिद्धांत

इस अध्याय में युद्ध की मूल अवधारणा, उसके प्रकार, उद्देश्य और रणनीतियों की विवेचना की गई है। क्लॉजविट्ज, सन्तजु और कौटिल्य

जैसे विचारकों के दृष्टिकोणों के माध्यम से यह अध्याय ये समझाता है कि युद्ध क्यों और कैसे लड़ा जाता है तथा यह किस प्रकार राजनीति का विस्तार है।

2. आर्थिक युद्ध

यह अध्याय आधुनिक युग में आर्थिक शक्ति के माध्यम से युद्ध छेड़ने की प्रवृत्ति की पड़ताल करता है। व्यापार प्रतिबंध, बहुराष्ट्रीय निगमों की भूमिका, आर्थिक नाकेबंदी, मुद्रा युद्ध और वैश्विक संस्थानों के माध्यम से दबाव की रणनीतियाँ – ये सभी आज के 'शीत युद्ध' के नए रूप हैं।

3. मनोवैज्ञानिक युद्ध

युद्ध केवल हथियारों से नहीं विचारों और भावनाओं के माध्यम से भी लड़ा जाता है। इस अध्याय में मीडिया, प्रचार, दुष्प्रचार, झूठी सूचनाओं और सामाजिक मनोविज्ञान के प्रभावों की समीक्षा की गई है, जिससे समाज को भ्रमित कर किसी राजनीतिक या सैन्य लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

4. सामूहिक सुरक्षा

यह अध्याय सुरक्षा की एक सहयोगात्मक अवधारणा की व्याख्या करता है, जहाँ कई राष्ट्र मिलकर एक–दूसरे की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध होते हैं। संयुक्त राष्ट्र, NATO, CENTO जैसे संगठनों की भूमिका, उनकी सफलताएँ और विफलताएँ, तथा वैश्विक शांति प्रयासों की जटिलताएँ यहाँ विस्तार से प्रस्तुत की गई हैं।

5. भारत–चीन युद्ध

वर्ष 1962 का भारत–चीन युद्ध न केवल सैन्य विफलता का उदाहरण था, बल्कि यह विदेश नीति, खुफिया तंत्र और रक्षा तैयारियों में कमियों का भी दर्पण है। यह अध्याय उस युद्ध के ऐतिहासिक, भौगोलिक और रणनीतिक कारणों का विश्लेषण करता है और बताता है कि यह संघर्ष आज भी भारत की सुरक्षा नीतियों को कैसे प्रभावित करता है। वर्ष 1962 में भारत की करारी हार का भारत पर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा, जिससे राष्ट्रीय अपमान की भावना, अपनी विदेश नीति का पुनर्मूल्यांकन

(गुटनिरपेक्षता से दूर जाना) और अपनी सैन्य क्षमताओं का महत्वपूर्ण आधुनिकीकरण हुआ। समृद्ध आर्थिक संबंधों और कई दौर की वार्ताओं के बावजूद, सीमा विवाद अनसुलझा बना हुआ है, जो दोनों एशियाई दिग्गजों के बीच तनाव और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का एक स्रोत बना हुआ है ।

6. भारत–पाक युद्ध

भारत और पाकिस्तान के बीच संबंध स्वतंत्रता के बाद से ही तनावपूर्ण रहे हैं, जिसका मुख्य कारण कश्मीर मुद्दा है। दोनों देशों ने वर्ष 1947–48, 1965 और 1971 में तीन प्रमुख युद्ध लड़े हैं, जिनमें से प्रत्येक कश्मीर के मुद्दे से जुड़ा हुआ है, सिवाय वर्ष 1971 के युद्ध के, जो बांग्लादेश मुक्ति युद्ध के कारण हुआ था। वर्ष 1999 में कारगिल युद्ध महत्वपूर्ण संघर्ष था, जो तब हुआ जब दोनों देशों के पास परमाणु हथियार थे। भारत और पाकिस्तान दोनों द्वारा परमाणु हथियारों के अधिग्रहण ने उनके प्रतिद्वंद्विता में एक खतरनाक आयाम पेश किया है, जिससे पारस्परिक रूप से सुनिश्चित विनाश की स्थिति पैदा हो गई है जो बड़े पैमाने पर पारंपरिक युद्ध को तो रोकती है लेकिन सीमित संघर्षों के जोखिम को समाप्त नहीं करती है। भारत–पाकिस्तान संबंध अत्यधिक तनावपूर्ण और नाजुक बने हुए हैं, जो गहरी अविश्वास, आवर्ती संकटों और संघर्ष के हमेशा मौजूद खतरे से चिह्नित हैं, जिसमें कोई भी गलत कदम परमाणु वातावरण में विनाशकारी परिणाम दे सकता है।

भारत और पाकिस्तान के मध्य वर्ष 1947, 1965, 1971 एवं 1999 में हुए युद्ध की पड़ताल करते हुए यह अध्याय दक्षिण एशिया की सुरक्षा राजनीति को समझने का माध्यम बनता है। इसमें सैन्य रणनीतियाँ, परमाणु नीति, कश्मीर मुद्दा और आतंकवाद की भूमिका का समग्र अध्ययन किया गया है।

7. राष्ट्रीय सुरक्षा के आंतरिक खतरे

भारत जैसे विविधता से भरे राष्ट्र में आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियाँ अधिक गंभीर हैं। जातीय संघर्ष, मज़हबी उन्माद, क्षेत्रीय असंतोष, और सीमा पार से प्रायोजित अस्थिरता जैसे तत्व राष्ट्रीय अखंडता को चुनौती

देते हैं। इस अध्याय में इन खतरों के मूल कारणों और समाधान की रणनीतियों पर विचार किया गया है।

8. विप्लव गतिविधियाँ

जब असंतोष सामाजिक या वैचारिक विद्रोह में परिवर्तित हो जाता है, तो वह विप्लव का रूप ले लेता है। यह अध्याय वामपंथी उग्र आंदोलन, पृथकतावादी विचारधाराओं और सशस्त्र विद्रोहों के विकास, प्रसार और निवारण की रणनीतियों की विवेचना करता है।

9. आतंकवाद

आतंकवाद आज के समय की सबसे जटिल और वैश्विक चुनौती है। यह अध्याय आतंकवाद की परिभाषा, प्रकार, वित्त पोषण, वैचारिक आधार और भारत पर इसके प्रभावों की व्यापक समीक्षा करता है। साथ ही, इससे निपटने के लिए घरेलू और अंतरराष्ट्रीय रणनीतियों का विश्लेषण भी करता है।

10. नक्सलवाद

भारत के 'लाल गलियारे' में फैले नक्सलवाद को एक गंभीर आंतरिक सुरक्षा संकट के रूप में देखा जाता है। यह अध्याय नक्सल आंदोलन के ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक पक्षों को उजागर करता है और बताता है कि यह केवल कानून–व्यवस्था की समस्या नहीं, बल्कि एक गहरे सामाजिक और वैचारिक असंतोष की अभिव्यक्ति है।

11. साइबर सुरक्षा

21वीं सदी में युद्ध का सबसे नया मोर्चा है – साइबर स्पेस। इस अध्याय में बताया गया है कि किस प्रकार हैकिंग, डेटा चोरी, डिजिटल जासूसी और साइबर आतंकवाद जैसे खतरे राष्ट्रीय सुरक्षा को एक नए स्तर पर चुनौती दे रहे हैं। भारत की साइबर तैयारियों और रणनीतियों पर भी प्रकाश डाला गया है।

निष्कर्ष

यह पुस्तक युद्ध को केवल एक सैन्य अवधारणा नहीं, बल्कि एक समग्र और बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करती है। इसमें

ऐतिहासिक उदाहरणों, समकालीन सन्दर्भों और भविष्य की चुनौतियों का संतुलित विश्लेषण किया गया है। यह पुस्तक न केवल सैन्य अध्ययन के विद्यार्थियों के लिए, बल्कि नीति निर्धारकों, प्रशासनिक सेवाओं के अभ्यर्थियों और जागरूक नागरिकों के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रस्तुत पुस्तक की भाषा को यथा संभव सरल और शैली को बोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है। पुस्तक प्रणयन में जिन विद्वानों, लेखकों की कृतियों का सहारा लिया गया है उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित है तथा अंत में सभी महानुभावों का जिनका जाने– अनजाने में सहयोग लेकर यह रचना पूर्ण हो सकी है, हम हृदय से अभारी हैं।

सुधार के लिये जो भी सुझाव आयेंगे उनका सहर्ष स्वागत किया जायेगा।

डॉ. गिरीश कांत पाण्डेय
डॉ. प्रवीण कड़वे
डॉ. गीतांजलि चंद्राकर

अनुक्रमणिका

क्र.	अध्याय	पृ.क्र.
01.	युद्ध का सिद्धांत	01
02.	आर्थिक युद्ध	25
03.	मनोवैज्ञानिक युद्ध	34
04.	सामूहिक सुरक्षा	45
05.	भारत – चीन युद्ध 1962	69
06.	भारत–पाकिस्तान युद्ध	77
07.	राष्ट्रीय सुरक्षा को आंतरिक खतरे	107
08.	विप्लव गतिविधि	123
09.	आतंकवाद	141
10.	नक्सलवाद	169
11.	साइबर सुरक्षा	184
12.	संदर्भ सूची	207

लेखक परिचय

डॉ. प्रवीण कड़वे

शिक्षा	:	एम.एस-सी., नेट (जेआरएफ), पी-एच.डी।
शैक्षणिक अनुभव	:	30 वर्ष (स्नातकोत्तर)
प्रकाशन	:	विषय से संबंधित 31 शोध आलेखों का राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध प्रपत्रों में प्रकाशन।
शोध निर्देशन	:	आपके निर्देशन में 04 शोधार्थी पी-एच.डी. हेतु पंजीकृत है।

लेखक परिचय

डॉ. गीतांजलि चन्द्राकर

शिक्षा	:	एम.एस-सी., पी-एच.डी., पी.डी.एफ.।
शैक्षणिक अनुभव	:	रक्षा अध्ययन विभाग, शा.ना. स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यलाय में 18 वर्षों से अध्यापन कार्य।
प्रकाशन	:	विषय से संबंधित 20 शोध आलेखों का राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध प्रपत्रों में प्रकाशन तथा वर्ष 2015 में CCOST की ओर 13th Chattisgarh Young Scientist Award से सम्मानित।

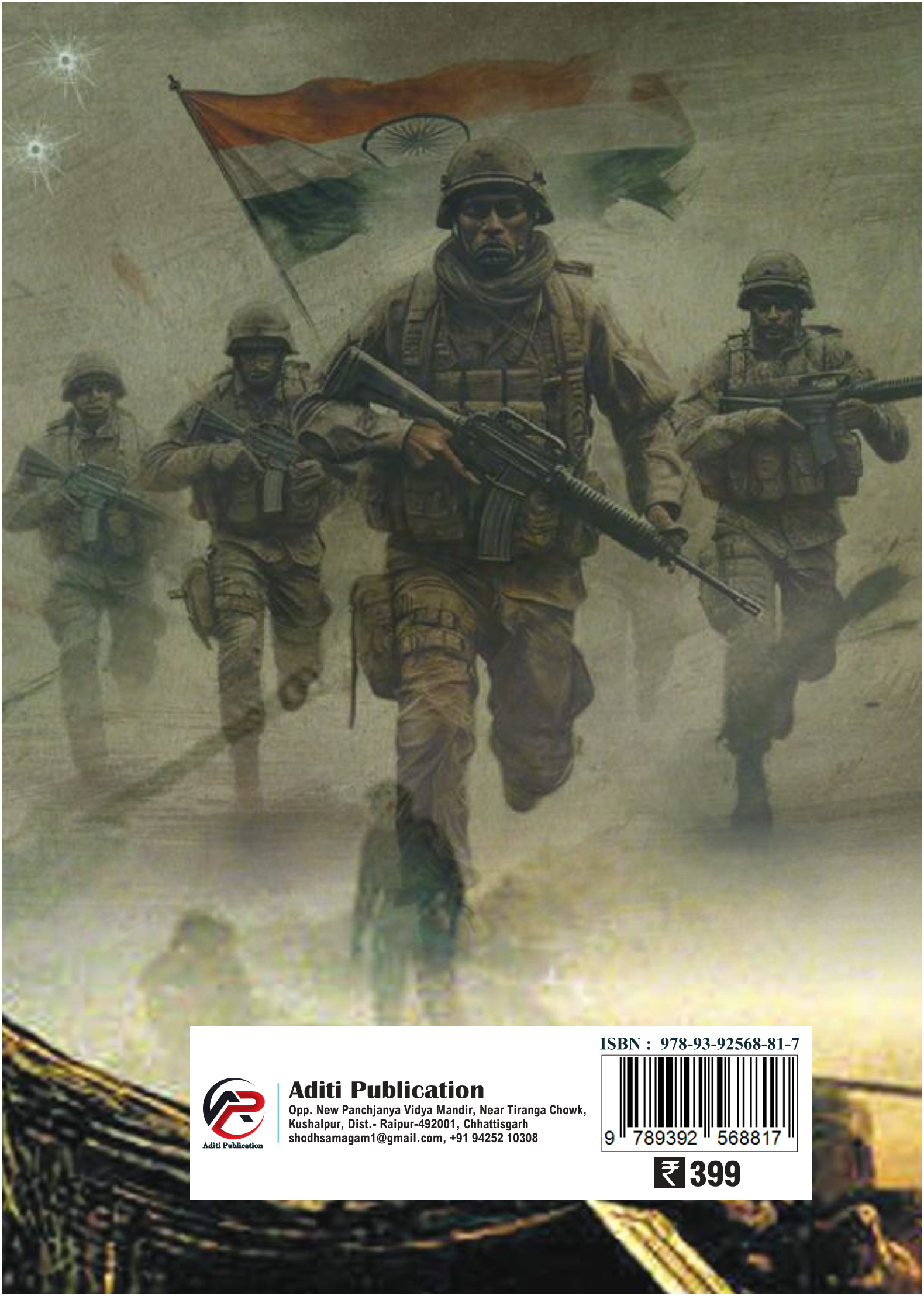

ISBN : 978-93-92568-81-7

9 789392 568817

₹ 399

Aditi Publication

Aditi Publication

Opp. New Panchjanya Vidya Mandir, Near Tiranga Chowk,
Kushalpur, Dist.- Raipur-492001, Chhattisgarh
shodhsamagam1@gmail.com, +91 94252 10308